IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सुल्तानगंज शहर का भूमि उपयोग : एक भौगोलिक अध्ययन

[1]कृष्ण जी, यू•जी•सी• नेट, [1]शोधार्थी, [1]भूगोल विभाग, [1]तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर,

[2]डॉ॰ विजय कुमार, [2]सहायक प्राध्यापक, [2] भूगोल विभाग, [2]महादेव सिंह महाविद्यालय, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर,

सारांश: भूमि उपयोग और भूमि आवरण में परिवर्तन हमारे आसपास हो रहे सबसे महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष परिवर्तन में से एक है । अधिकांश भूमि उपयोग और भूमि आवरण परिवर्तन सीधे मानवीय गतिविधियों से प्रभावित होते हैं, इसलिए वे शायद ही कभी मानवीय पारिस्थितिकी के सिद्धांतों का पालन करते हैं।

नगरीय भूमि उपयोग में नगर की भूमिका कार्यों के आधार पर वर्गीकृत होती है , तथा भूमि का भौगोलिक विस्तार का अध्यान करते हुए यह जानने का प्रयास किया जाता है कि नगरीय भूमि उपयोग का कितना भाग किन कार्यों में उपयोग है तथा स्थित ईमारतो का क्रियात्मक संरचना के साथ वहां के लोगों का व्यावसायिक संरचना क्या है , जिससे शहर की संरचना और उसकी विशेषताओं का बेहतर समझ ज्ञात होता है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य सुल्तानगंज के बदलते भूमि उपयोग के समस्या एवं समाधान का विश्लेषण करना है, अध्ययन के लिए आंकड़ों का संग्रह भारतीय जनगणना विभाग , भागलपुर का मास्टर प्लान , शोध पत्रिकाएं एवं विभिन्न रिपोर्ट आदि से एकत्र किए गए आंकड़े द्वितीयक स्रोत पर आधारित है , एवं शहर की समस्या एवं योजन के लिए क्षेत्रीय अवलोकन के द्वारा प्राथमिक आंकड़े भी एकत्रित किए गए हैं।

इस अध्ययन में पाया गया कि सुल्तानगंज शहर का क्षेत्रफल 1961 से 2011 तक स्थिर रहा परंतु जनसंख्या लगभग 5 गुनी बढ़ी है, इस प्रकार प्रति इकाई व्यक्ति पर घटते भूमि के कारण अनियोजित भूमि उपयोग से समस्याएं बढ़ी है ।

शब्द कुंजी – भूमि उपयोग, नगरीय भूमि उपयोग, कृषि क्षेत्र, जनसंख्या वृद्धि ,नगरीय समस्या इत्यादि।

भूमिका

मानव अपनी बढ़ती जनसंख्या तथा उसकी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने भूमि उपयोग में निरंतर परिवर्तन करते आया है। यह परिवर्तन सुनियोजित नहीं होने पर बहुत सारी समस्याएं उत्पन्न होती है, इन समस्याओं के समाधान के लिए हम वर्तमान भूमि उपयोग का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है ।

नगरीय भूमि उपयोग में नगर की भूमिका कार्यों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है , तथा नगरीय भूमि के भौगोलिक अवस्थिति एवं विस्तार का अध्ययन करके यह जानने का प्रया स करते हैं कि नगरीय भूमि का कौन सा भाग किस प्रकार के क्रियात्मक पहलू से जुड़ा हुआ है और नगरीय भूमि का कितना भाग किन कार्यों में उपयोग किया जाता है तथा उस पर स्थित इमारतों का उपयोग किन कार्यों में लिया जा रहा है एवं नगर के भीतर रहने वाले व्यक्तियों की व्यावसायिक संरचना किस प्रकार की है ।

सामान्यतः नगर के केंद्र से बाहर की और जाने पर सभी दिशाओं में नगरीय भूमि उपयोग में अंतर दिखाई देता है। अर्थात नगरीय सुविधाओं में उत्तरोत्तर कमी का आभास मिलता है, नगर के केंद्र मे अति व्यस्त व्यापारिक भूमि उपयोग से आवासीय और नगर की बाहरी सीमा पर प्राथमिक प्रकार के भूमि उपयोग का परिवर्तित प्रतिरूप दृष्टिगोचर होता है , नगर के भूमि मूल्य भी भूमि उपयोग की तीव्रता से प्रत्यक्ष संबंध रखता है, नगर में जनसंख्या एवं बस्तियों का घनत्व भी इसी ग्रुप में प्रभावित होता है।

सुल्तानगंज एक धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण नगर है इसका विकास धार्मिक तीर्थ स्थानों के रूप में उत्तरवाहिनी गंगा नदी के तट पर अवस्थिति और अजगैवीनाथ मंदिर के कारण हुआ है साथ ही यह क्षेत्र शुरु से ही व्यापारिक गतिविधियों का भी केंद्र रहा है। लेकिन जैसे – जैसे शहरीकरण और जनसंख्या दबाव बढ़ता गया , वैसे – वैसे शहर के भूमि उपयोग में भी परिवर्तन होता गया, यह परिवर्तन सुनियोजित नहीं होने के कारण शहर के भूमि उपयोग में कई समस्याएं उत्पन्न हुई है।

अध्ययन क्षेत्र

सुल्तानगंज भारत के बिहार राज्य के भागलपुर जिले में स्थित एक धार्मिक इतिहासिक स्थल है , जो कि गंगा के दक्षिणी तट पर भागलपुर मुख्य शहर से 25 किलोमीटर पश्चिम तथा राजधानी पटना से 208 किलोमीटर पूर्व में स्थित है , जिसका भौगोलिक विस्तार 25°12′48′′ से 25°15′52′′ उतरी अक्षांश तथा 86°42′32′′ से 86°48′1′′ पूर्वी देशांतर के बीच है। जो समुद्र तल से 141 फिट ऊंचाई पर स्थित है तथा क्षेत्रफल 12.29 वर्ग किलोमीटर है जिसमें रहने वाले लोगों के संख्या जनगणना 2011 के अनुसार 52892 है । यह शहर 25 वार्डों में विभक्त है , जिसमें घरों के संख्या 9410 है एवं इसके रख रखाव के लिए सुल्तानगंज नगर परिषद् है।

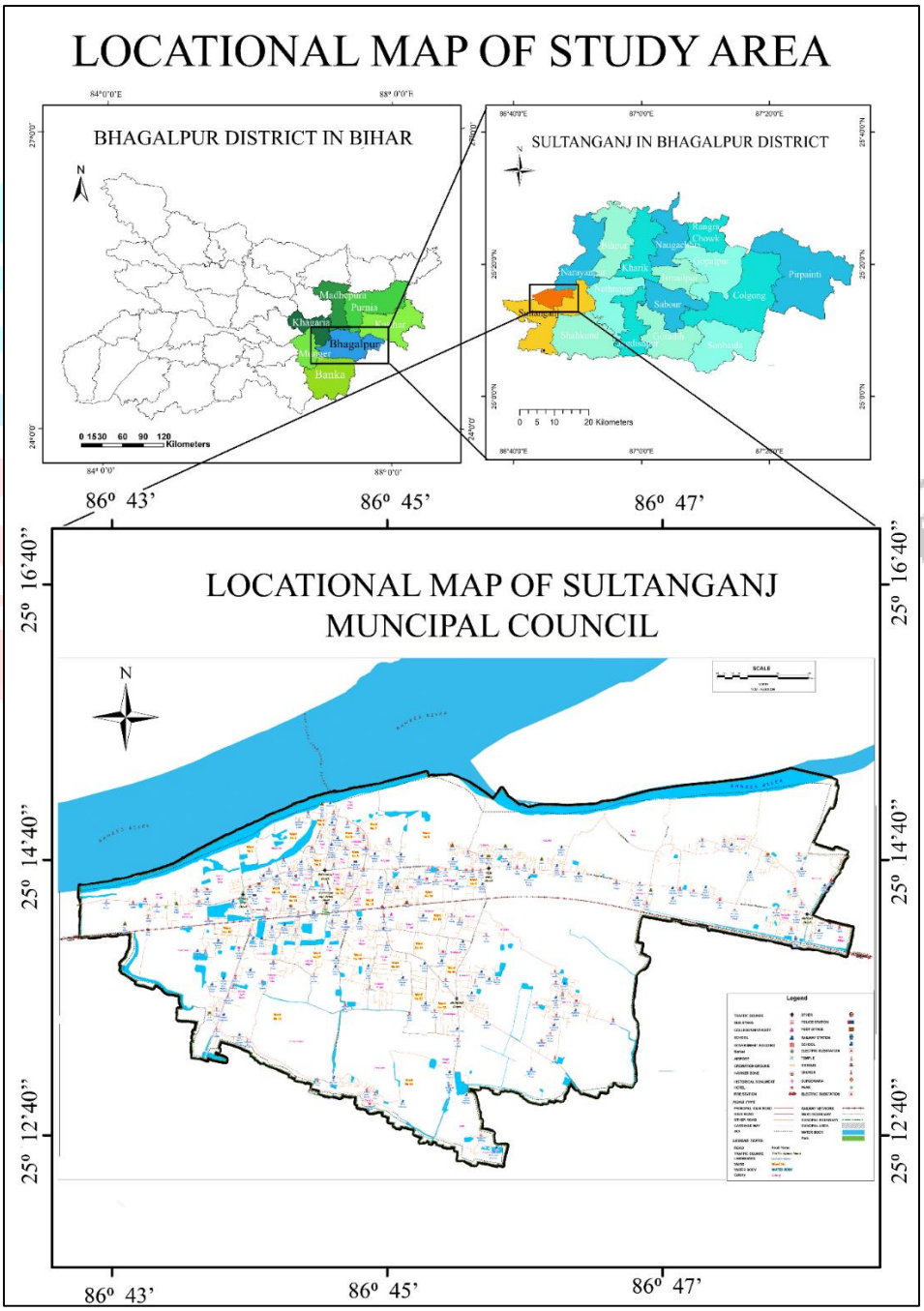

उद्देश्य

- बढ़ती जनसंख्या के अनुरूप उन्नत सुविधाएं प्रदान करने के लिए शहर कितना सक्षम है,इसकी जानकारी प्राप्त करना ।
- नगरी भूमि का कितना भाग किन कार्यों में प्रयोग होता है, इसे उजागर करना ।

अनुसंधान क्रिया विधि और आंकड़ों के स्रोत

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए दो प्रकार के आंकड़ों का संकलन किया गया है जिसमे प्राथमिक आंकड़ों का संकलन नगर के भूमि उपयोग समस्या एवं नियोजन के प्रारूप तैयार करने के लिए तथा समस्या समाधान के लिए किया गया है और द्वितीयक आंकड़ों का संकलन भूमि उपयोग के वर्तमान स्वरूप एवं जनांकिकी विवरण के लिए उपलब्ध साहित्य के अध्ययन एवं विभिन्न प्रकाशित तथा अप्रकाशित सरकारी लिखो , भारतीय जनगणना विभाग के आंकड़ों , पत्रिकाएं ,जिला गजेटियर एवं इंटरनेट पर उपलब्ध स्रोतों से किया गया है ।

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण के लिए डै॰वतक 2016 , म्गबमस एवं ळप्ै सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया गया है।

जनांकिकी

स्वतंत्रता पश्चात वर्ष 1961 की जनगणना में सुल्तानगंज को नगर परिषद् के तौर पर परिभाषित कर दिया गया था उस समय से वर्ष 2011 तक सुल्तानगंज का क्षेत्रफल 12.29 वर्ग किलोमीटर स्थिर रहा । परंतु जनसंख्या में निरंतर वृद्धि होती गई वर्ष 1961 में जनसंख्या 11815 था एवं प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल मे रहने वाले लोगों की संख्या 961 था। वहीं वर्ष 1971 में जनसंख्या 14654 एवं जनसंख्या वृद्धि दर 24 प्रतिशत तथा जनसंख्या घनत्व 1193 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर वर्ष 1971 से 1981 के बीच 54.01 प्रतिशत रही तथा जन घनत्व 1837 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर थी जबकि सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर वर्ष 1981 से 1991 के बीच 51.5 प्रतिशत रहा तब सुल्तानगंज नगर परिषद का जनसंख्या 34181 एवं जनसंख्या घनत्व 2781 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वर्ष 1961 से 1981 तक जनसंख्या वृद्धि दर में लगातार वृद्धि रही । तत्पश्चात् जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट हुई , जिसमें सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दशक 1981– 1991 के बीच 50 प्रतिशत से अधिक रही परंतु जनसंख्या एवं जनसंख्या घनत्व में निरंतर 1961 से 2011 तक बढ़ोत्तरी दर्ज की गई।

<u>तालिका 1</u>

<u>सुल्तानगंज नगर परिषद में जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व, 1961 -2011</u>

वर्ष	जनसंख्या	वृद्धि (%)	घनत्व
1961	11815	---------	961
1971	14654	24	1192
1981	22578	54.1	1837
1991	34181	51.4	2781
2001	41958	22.8	3414
2011	52892	26.1	4304

ैवनतबमे. ब्मदेने व ि प्दकपं, 2011

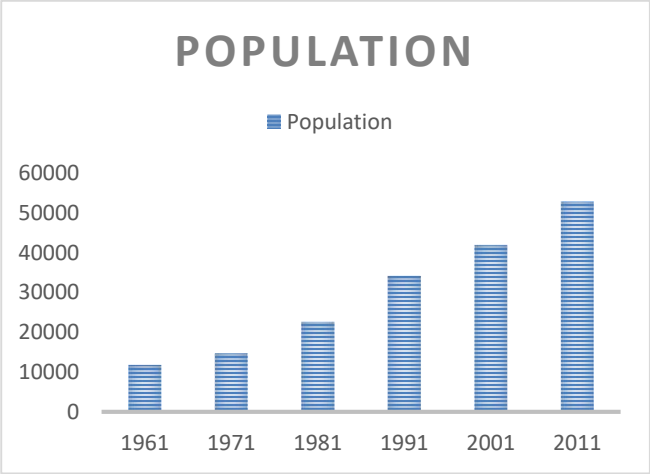

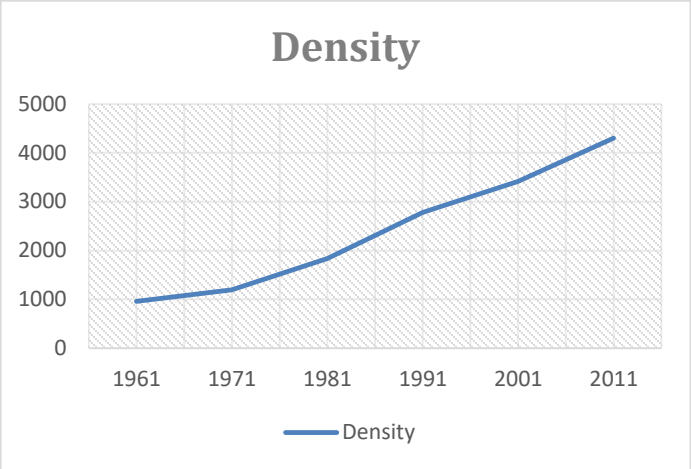

सुल्तानगंज भूमि उपयोग का भौगोलिक विश्लेषण

सुल्तानगंज अंग्रेजी हुकूमत के समय से ही औद्योगिक गतिविधि का केंद्र रहा उस समय यहां नील फैक्ट्री था तथा नील का उत्पादन कर जल परिवहन तथा रेल मार्ग से इसे बाहर भेजा जाता था और बाद में बहुत सारे मिल गोदाम इत्यादि खोले गए जिससे शहरीकरण को और भी अधिक बढ़ावा मिला और भूमि उपयोग प्रतिरूप भी बदलता रहा। तथा यह शहर शुरू से हिंदू धार्मिक तीर्थंकर के लिए भी बहुत अधिक आकर्षण का केंद्र रहा है , इस शहर के धार्मिक महत्व ने शहर के भूमि उपयोग पर अपना विशेष छाप छोड़ा है। यहां का भूमि उपयोग धार्मिक पर्यटन ,कृषि ,व्यापार और आवासीय उद्देश्यों पर आधारित है।

सुल्तानगंज का भूमि उपयोग प्रतिरूप

- **धार्मिक क्षेत्र**

सुल्तानगंज प्राचीन काल से ही धार्मिक तीर्थंकरों के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा है सुल्तानगंज की अवस्थिति अति पावन उत्तर वाहिनी गंगा के किनारे होने के कारण श्रद्धालुओं का सालों भर गंगा स्नान के लिए आना लगा रहता है , जिस कारण गंगा किनारे का क्षेत्र धार्मिक गतिविधि के लिए उपयोग होता है जिसमें मुख्य दो घाट है एक नमामि गंगे घाट दूसरा सीढ़ी घाट जिसके किनारे विश्व प्रसिद्ध बाबा अजगैवीनाथ मंदिर है जो गुप्तकालिन नक्काशीयुक्त ग्रैनाइट की पहाड़ी पर है, जहां लोग अपने धार्मिक उद्देश्यों को पूर्ति के लिए आते–जाते रहते है। यह क्षेत्र मुख्य रूप से हिन्दू धार्मिक तीर्थ यात्रियों के लिए उपयोग होता है। सुल्तानगंज के धार्मिक क्षेत्र का कालिक परिवर्तन भी होता है, श्रावण महीने में यहां आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या इतनी बढ़ जाती है कि लगभग पूरा शहर ही धार्मिक गतिविधि में लिप्त होने के कारण पूरा शहर ही धार्मिक क्षेत्र हो जाता है। इसके अलावा मुरली पहाड़ भी इस्लाम अनुयायियों के लिए धार्मिक क्षेत्र है।

- **आवासीय क्षेत्र**

आवासीय क्षेत्र बढ़ती जनसंख्या के अनुरूप बढ़ता रहा है हम यह भी कह सकते हैं कि जनसंख्या और आवासीय क्षेत्र मे धनात्मक संबंध है वर्ष 1961 में प्रति वर्ग किलोमीटर रहने वाले लोगों की संख्या 961 व्यक्ति प्रति थी परंतु वर्ष 2011 में 4304 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर रहने लगे । वर्तमान समय में शहर में कुल सड़क लंबाई 24 किलोमीटर है इसी सड़क के दोनों किनारे मुख्य आवासीय क्षेत्र है । शहर का केंद्र सुल्तानगंज चौक है जो स्टेशन रोड सह घाट रोड को छभ–80 के काटने से चौराहा बना है , जो की घनी आबादी वाले आवासीय क्षेत्र हैं । शहर के बाहरी छोड़ पर विरल आबादी वाले आवासीय क्षेत्र तथा कुछ मलिन बस्तियां भी है।

- **व्यावसायिक क्षेत्र**

शहर का मुख्य व्यावसायिक क्षेत्र सुल्तानगंज चौक के चतुर्दिक फैला हुआ है थोक किराना की दुकान सब्जी इत्यादि का व्यवसाय चौक बाजार के पूर्व छभ– 80 पर होता है साथ ही खुदरा दुकानों का भी बड़ी संख्या है। चौक से उत्तर कपड़ों के दुकानों का समूह है , वहीं चौक दक्षिणी भाग में मुख्य सड़क के पूर्व में मिठाई दुकानों का समूह है। तथा शहर के बाहरी भाग में बड़े दुकान हैं जैसे मोटर वाहनों का शोरूम, आरा मिल, जलावटी लकड़ी ,बांस इत्यादि के दुकानें है।

सुल्तानगंज आने वाले श्रद्धालुओं की जरूरत को देखते हुए शहर के उत्तरी भाग में गंगा किनारे एक छोटा व्यावसायिक क्षेत्र बनकर उभरा है जिसमें कांवर के दुकानें, भोजनालय, विश्रामालय, वस्त्रालय, पूजा सामग्री ,डब्बा इत्यादि की दुकानें शामिल है । साथ ही पुरानी स्टेशन रोड , कृष्ण गढ़ , दिल गोरी मोर के समीप भी में छोटे व्यावसायिक क्षेत्र बनकर तैयार हुए हैं ,जो स्थानीय उपभोग के अनुरूप विकसित हो रहे है।

- **औद्योगिक क्षेत्र**

बिजली विभाग के 2009 के आंकड़ों के अनुसार सुल्तानगंज नगर परिषद् क्षेत्र में औद्योगिक बिजली जुड़ाव 50 है । जो वर्तमान में निश्चित तौर पर बढ़ा होगा, जनगणना 2011 के अनुसार सुल्तानगंज मे केवल प्लास्टिक डब्बा एवं हार्ड बोर्ड के उद्योग थे । परंतु अभी छोटे पैमाने पर प्लेट मेकिंग फैक्ट्री , वाटर प्यूरीफाइंग यूनिट जैसे गतिविधियों मे वृद्धि हुई है। यहां उद्योग के लिए कोई नियोजित भूमि नहीं है, ये आवासीय क्षेत्र में ही है। केवल ईंटा भट्टा के उद्योग ही आवासीय क्षेत्र से बाहर है, इसकी अवस्थिति गंगा किनारे सरल मिट्टी उपलब्धता के कारण है।

- **शैक्षणिक क्षेत्र**

छोटा नगरी भूमि होने के बावजूद शैक्षणिक संस्थान पर्याप्त मात्रा में मौजूद है ,परंतु इसलिए कोई पृथक क्षेत्र नहीं है । शैक्षणिक क्षेत्र के तौर पर सुल्तानगंज नगर परिषद् में भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार प्राथमिक विद्यालय की संख्या 20, मध्य विद्यालय की संख्या 10, उच्च विद्यालय की संख्या 3 एवं महाविद्यालय की संख्या 2 है तथा कुछ कोचिंग संस्थान भी है। ये सभी आवास क्षेत्र में ही सम्मिलित है केवल दोनों महाविद्यालय शहर के बाहरी पेटी में है ।

- **कृषि भूमि**

सुल्तानगंज के बाहरी हिस्से में खेती प्रमुख गतिविधि है, संपूर्ण क्षेत्र के 76.26 प्रतिशत भाग जनगणना 2011 के अनुसार कृषि योग्य भूमि है। शहर के आंतरिक भाग मे केवल शाक सब्जी की खेती की जाती है, जिसमें मुख्य तौर पर गोभी, बैंगन,मूली, भिंडी इत्यादि का पैदावार किया जाता है, ये सभी कृषि क्षेत्र आवासीय क्षेत्र के साथ जुड़ा हुआ है, जबकि बाहरी भाग में खाद्यान्न फसलों के रूप में धान गेहूं की खेती होती है।

- **परती भूमि**

वैसे तो शहरी क्षेत्र में परती भूमि नहीं के बराबर है, लेकिन शहर के बीचो – बीच एक कृष्णानंद मैदान है एवं गंगा किनारे ईंटा भट्टा के कारण कुछ परती भूमि रह जाती हैं।

निष्कर्ष:

सुल्तानगंज शहर के भूमि उपयोग में इसका ऐतिहासिक परिपेक्ष दिखता है, मुख्य सड़क के किनारे अधिक जनघनत्व है, जबकि आंतरिक भाग और बाहरी पेटी में कम जनघनत्व है। मुख्य सड़क राष्ट्रीय राजमार्ग 80 एवं पुरानी स्टेशन से गंगा किनारे तक सड़क किनारे का मकान व्यवसायिक सह आवासीय मकान है , यह शहर धार्मिक तीर्थंकरों का प्रमुख केंद्र होने के कारण यहाँ पर्यटन उद्योग की भारी संभावनाएं है, जिससे यहां के लोगों को इसका विशेष समाजिक एवं आर्थिक लाभ मिलेगा। इसे टिकाऊ और नियोजित तरीके से विकसित करने के लिए भू – उपयोग की वर्तमान स्थिति का आकलन और एक समग्र योजना की आवश्यकता है । उचित नियोजन से सुल्तानगंज न केवल स्वच्छ और सुंदर शहर बन सकता है, बल्कि यहाँ के आर्थिक और पर्यावरण संतुलन को भी बनाया रखा जा सकता है।

संदर्भ–सूची :

- कुमारी अपर्णा (2012), '' सुल्तानगंज श्रावणी मेला (जिला भागलपुर बिहार) का निकटवर्ती क्षेत्रों के जनजीवन पर सामाजिक आर्थिक प्रभाव : सांस्कृतिक भूगोल में एक अध्ययन ''
- बंसल, एस.सी. (2013), ''नगरीय भूगोल'', वसुन्धरा प्रकाशन, इलाहाबाद
- त्रिपाठी, ए.आर. (2015), ''गाजीपुर शहर का भूमि उपयोग एवं समस्याएं : एक भौगोलिक अध्ययन''
- तिवारी, आर.सी. (2017), ''अधिवास भूगोल'', प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- क्पेजतपबज ब्मदेने भ्ंदकइववा ठींहंसचनत ;2011द्ध